बहादुर पांडी
एक पारंपरिक ज़ुलु कहानी का पुनर्कथन
नथेन अर्नाउटिस
चित्र: सारा एडम्स

बहादुर पांडी

एक पारंपरिक ज़ुलु कहानी का पुनर्कथन

नथेन अर्नाउटिस

चित्र: सारा एडम्स
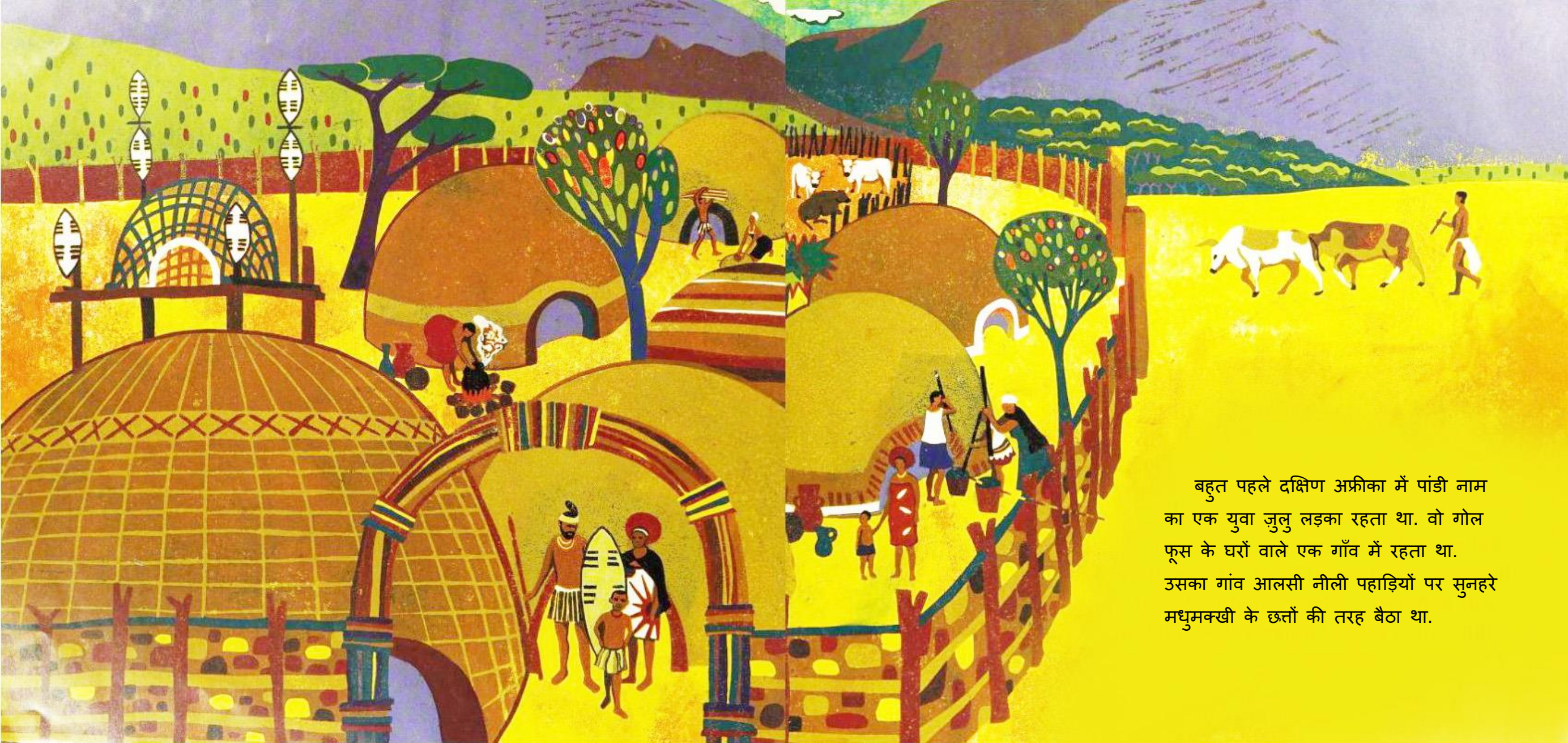
बहुत पहले दक्षिण अफ्रीका में पांडी नाम का एक युवा ज़ुलु लड़का रहता था. वो गोल फूस के घरों वाले एक गाँव में रहता था. उसका गांव आलसी नीली पहाड़ियों पर सुनहरे मधुमक्खी के छत्तों की तरह बैठा था.

पांडी प्रतिदिन गाँव के किनारे गायों को चराने जाता था. उसकी एक गाय बाकी सभी गायों से छोटी थी और लोग उसे तुगेला बुलाते थे. वो पांडी की पसंदीदा थी और जब वो उसकी नाक पर हाथ फेरता, तो वो धीरे से रंभाती थी.
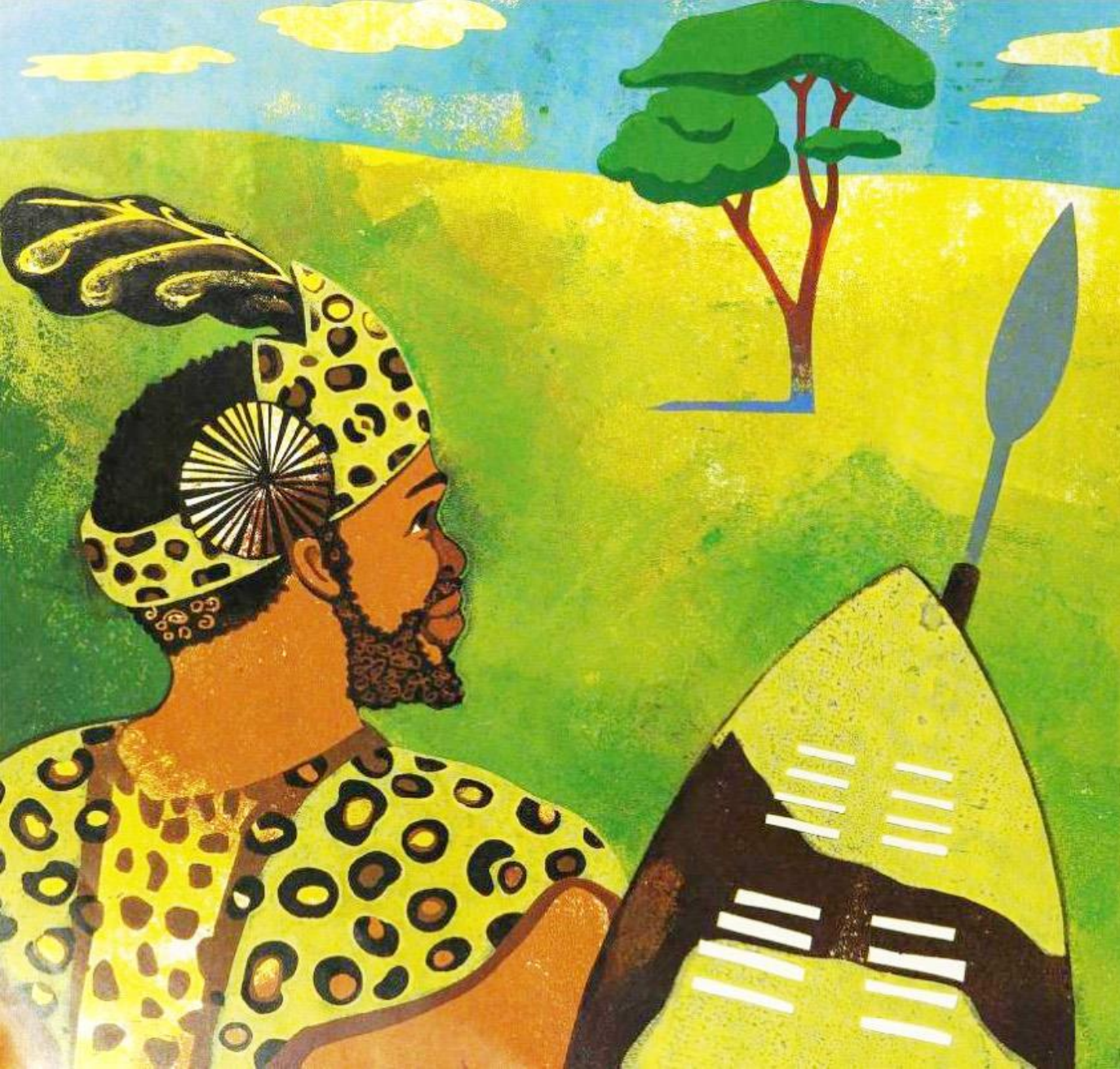
पांडी के तीन बड़े भाई थे. उसके पिता अपने समुदाय के मुखिया थे. पिता ने अपने तीनों बड़े बेटों को एक चमकता हुआ भाला और एक तेंदुए की खाल दी थी, जिससे पता चलता था कि उनके बेटे बहादुर थे.

"मेरे तीन बहादुर बेटे हैं," पांडी के पिता ने कहा. "अब पांडी को अपनी बहादुरी का सबूत देना होगा."
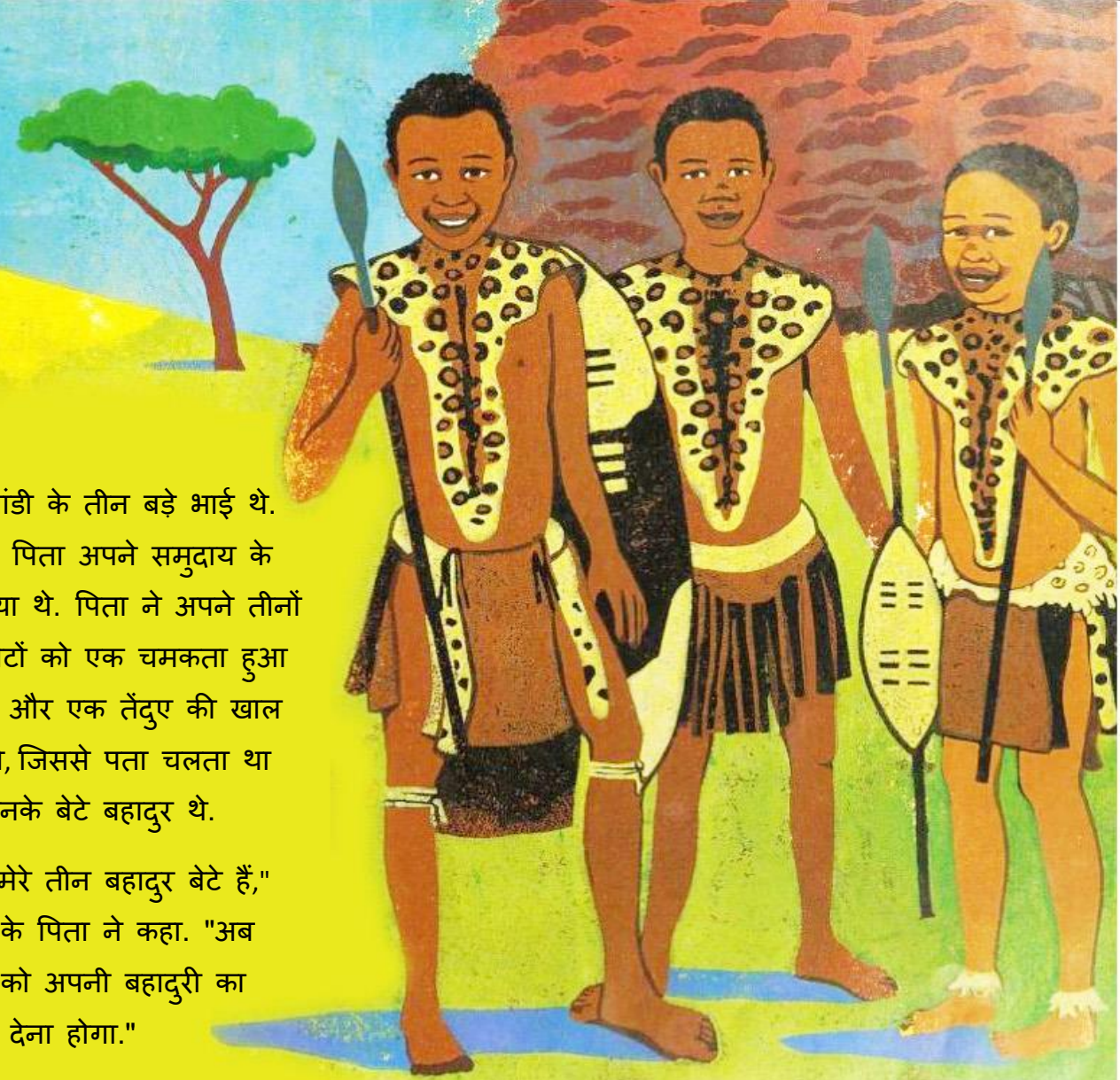
पांडी ने अपने भाइयों से कहा, "मुझे भी अपने साथ शिकार पर लेकर चलो."

"तुम हलवे की तरह नरम हो," जोबी ने कहा.

"तुम एक छोटे खरगोश जितने बहादुर हो," शाका ने कहा.

"तुम एक हिरन की तरह शर्मीले हो," सेत्सवेयो ने कहा.

और फिर तीनों बड़े भाई पांडी के बिना ही शिकार करने चले गए. माँ ने पांडी को गले लगाकर उसे सांत्वना दी. "चिंता मत करो," माँ ने कहा. "तुम भी जल्द ही अपने भाइयों जैसे ही बड़े और बहादुर बनोगे."
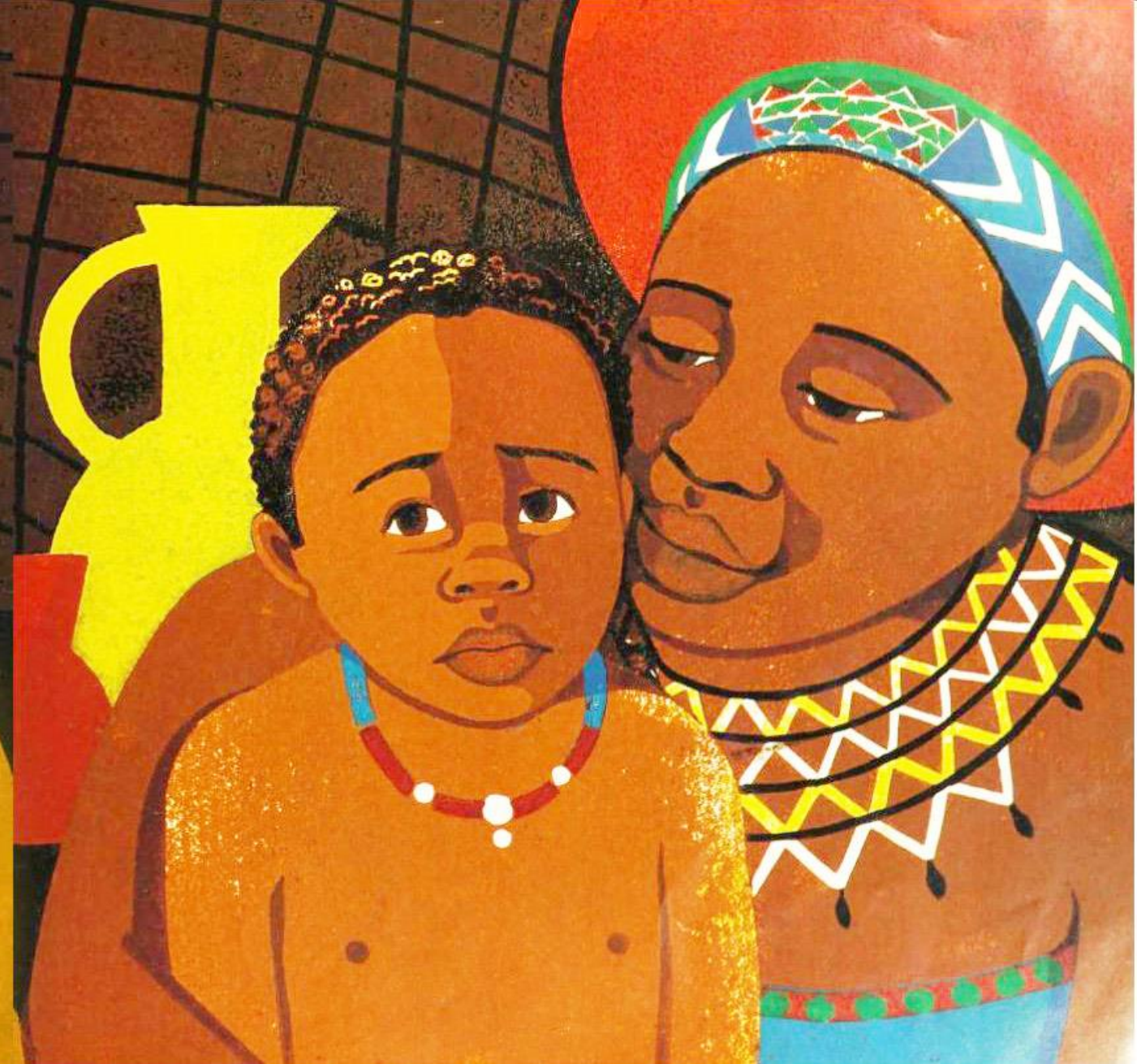
हालांकि पांडी बहुत बड़ा, ताकतवर और बहादुर नहीं था, लेकिन वो ऊंचे कंटीले पेड़ों पर बैठे बंदरों से बातें करना जानता था. वो हिरण के खुरों की छाप देखकर उनका पीछा कर सकता था. और उसे अपने घर की छत के लिए ऊंची लहराती घास काटने का सबसे अच्छा स्थान पता था. लेकिन वो अँधेरे से बहुत डरता था.
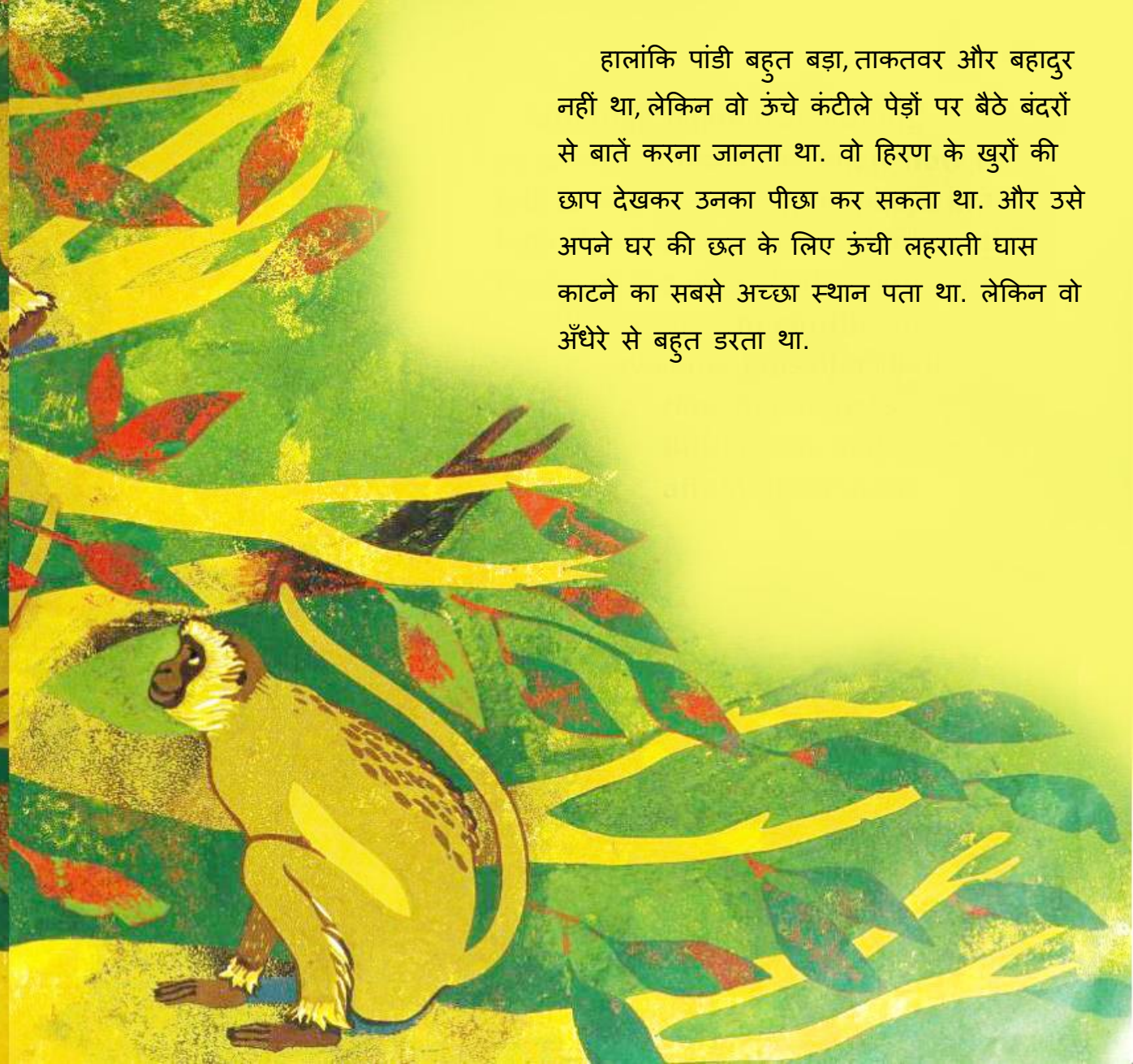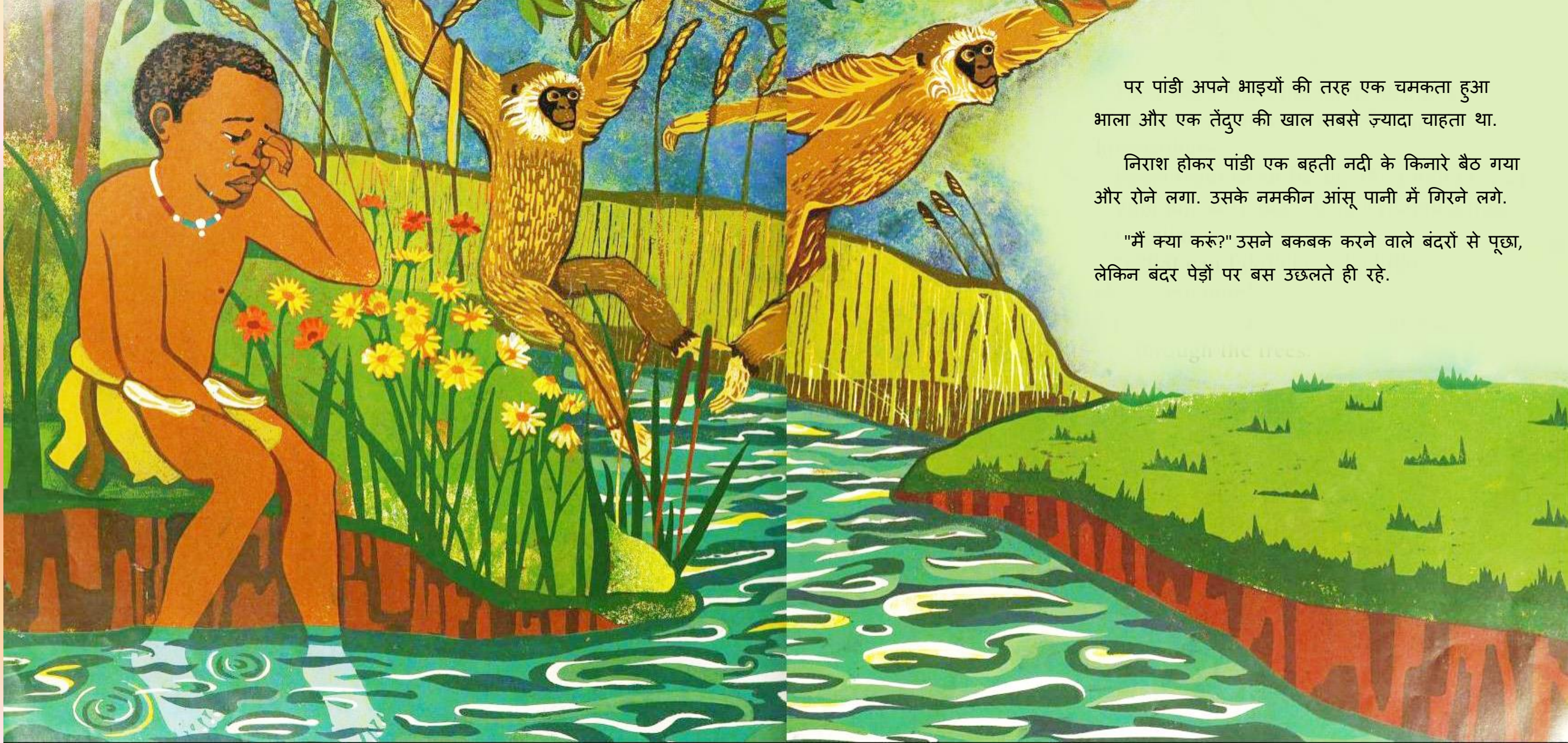
पर पांडी अपने भाइयों की तरह एक चमकता हुआ भाला और एक तेंदुए की खाल सबसे ज़्यादा चाहता था.

निराश होकर पांडी एक बहती नदी के किनारे बैठ गया और रोने लगा. उसके नमकीन आंसू पानी में गिरने लगे.

"मैं क्या करूं?" उसने बकबक करने वाले बंदरों से पूछा, लेकिन बंदर पेड़ों पर बस उछलते ही रहे.

उस रात एक भयानक तूफ़ान आया और पांडी सो नहीं सका. बहुत ज़ोर की बारिश आई और तेज़ आंधी चलने लगी.

अचानक उसे एक लंबी धीमी आवाज सुनाई दी जो हवा की तरह पतली और बर्फ की तरह ठंडी थी.

"ऊ-ऊ. ऊ-ऊ." पांडी ने अपना सिर अपने कंबल के नीचे छिपा लिया. लेकिन वो आवाज़ लगातार आती रही. "ऊ-ऊ."

"वो मेरी गाय तुगेला होगी," पांडी ने कहा. लगता है वो किसी मुश्किल में फंसी है!
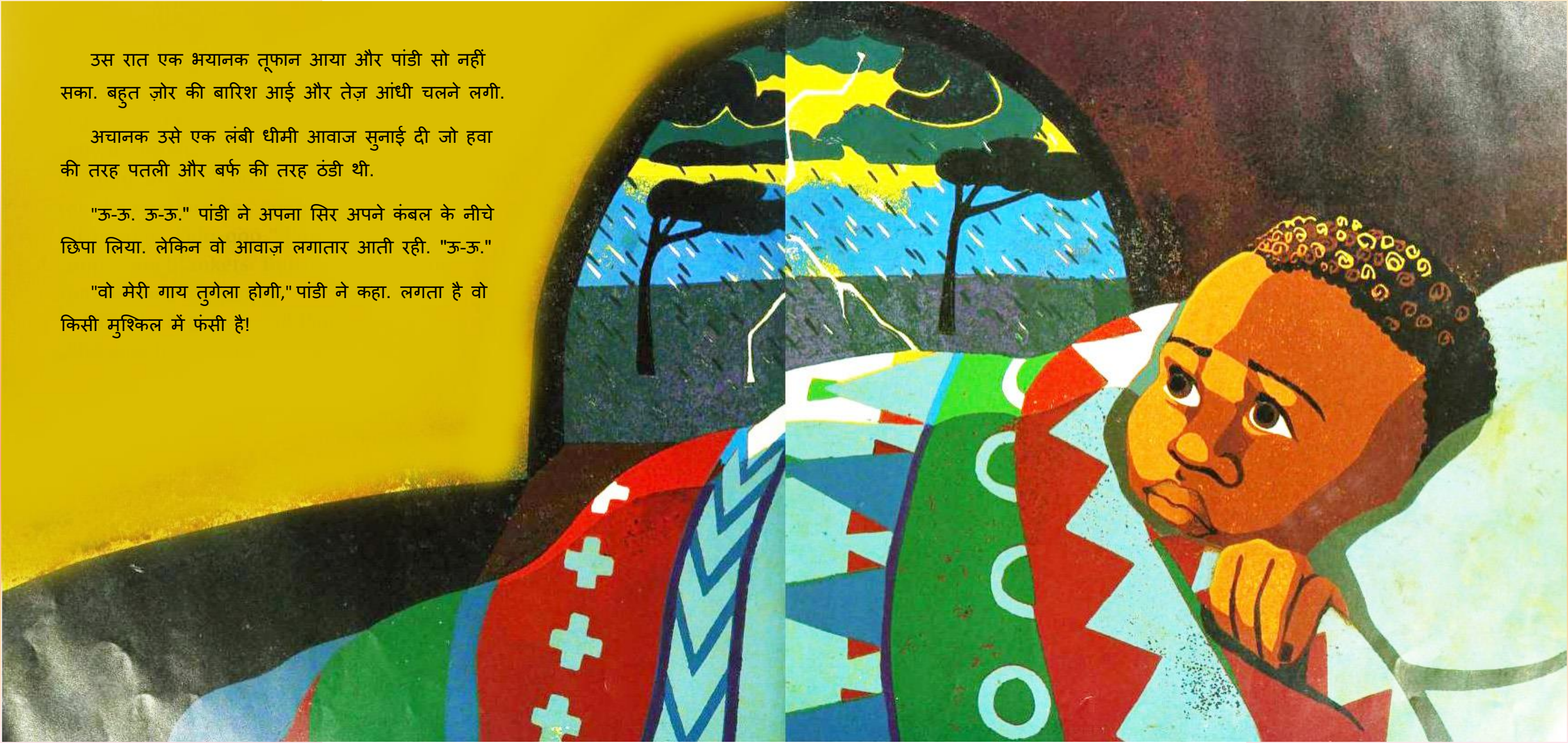
बाहर घना अंधेरा था. हो सकता है कि बुरी आत्माएं पहाड़ों पर घूम रही हों, पांडी ने सोचा. शायद कोई चित्तीदार तेंदुए ने मेरी गाय पर वार किया हो.

या हो सकता है कि मेरी गाय किसी खड्डे में गिर गई हो.

कराहने की आवाज़ लगातार आती रही.

"ऊ-ऊ. ऊ-ऊ."
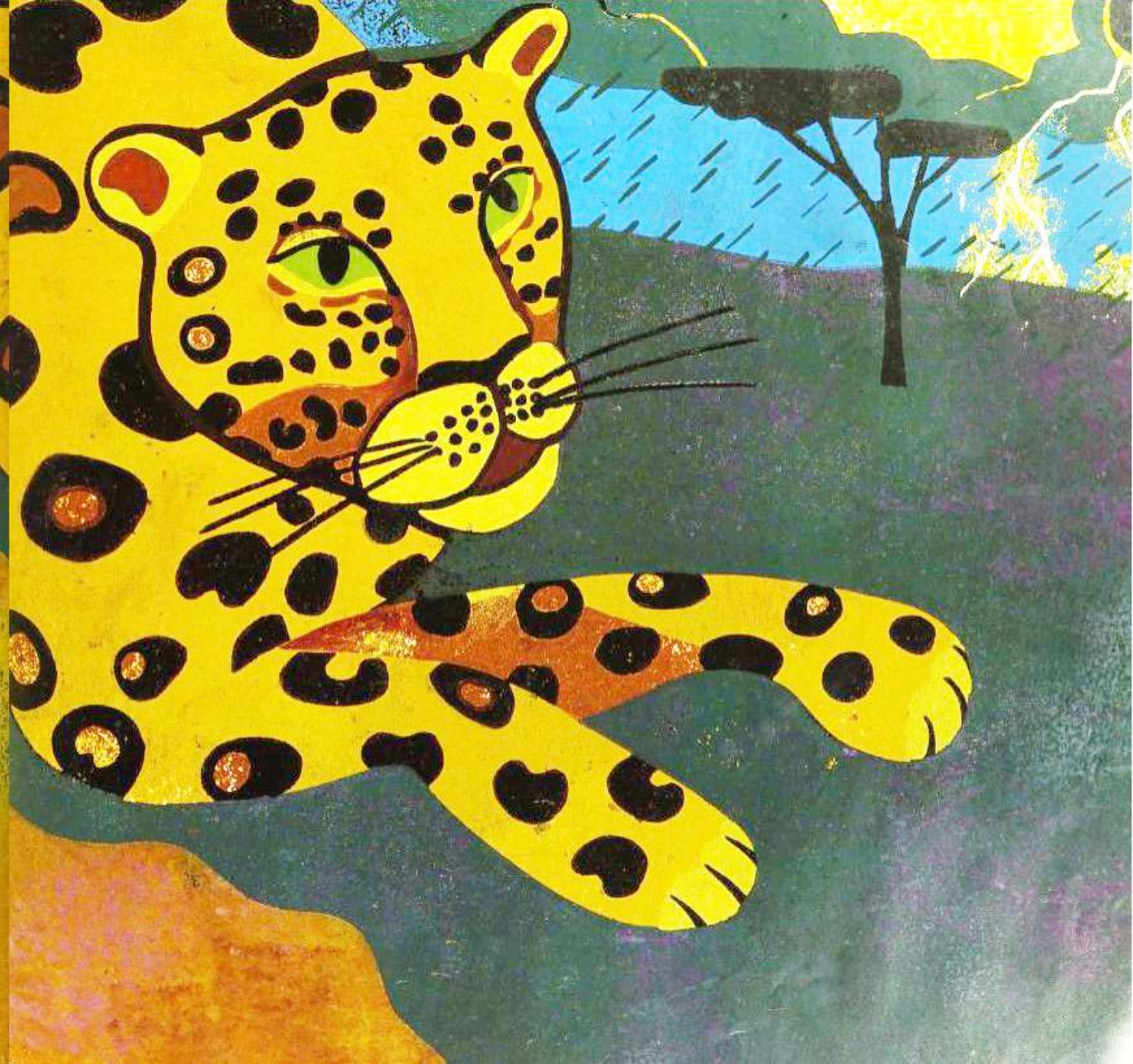
पांडी को लगा की उसकी प्यारी तुगेला अंधेरे में अकेली होगी. फिर पांडी बिस्तर से कूदा और बाहर अँधेरे में चला गया.

कुछ गीला और ठंडा उसके चेहरे पर आकर गिरा. उसका दिल किसी ढोल की तरह जोर से धड़कने लगा. लेकिन वो केवल पेड़ से टपकने वाली बारिश की एक बूंद थी!

उसे दूर पर एक भूतिया हँसी सुनाई दी. लेकिन वो केवल एक सियार था जो चाँद को बुला रहा था.

अचानक उसने देखा कि तुगेला एक करवट के बल पड़ी हुई थी, और उसका एक खुर एक विशाल चट्टान में फंसा हुआ था.

"चिंता मत करो तुगेला," पांडी ने कहा. "मैं तुम्हें जल्द ही बाहर निकाल दूंगा." और फिर उसने प्यार से गाय का सिर सहलाया.
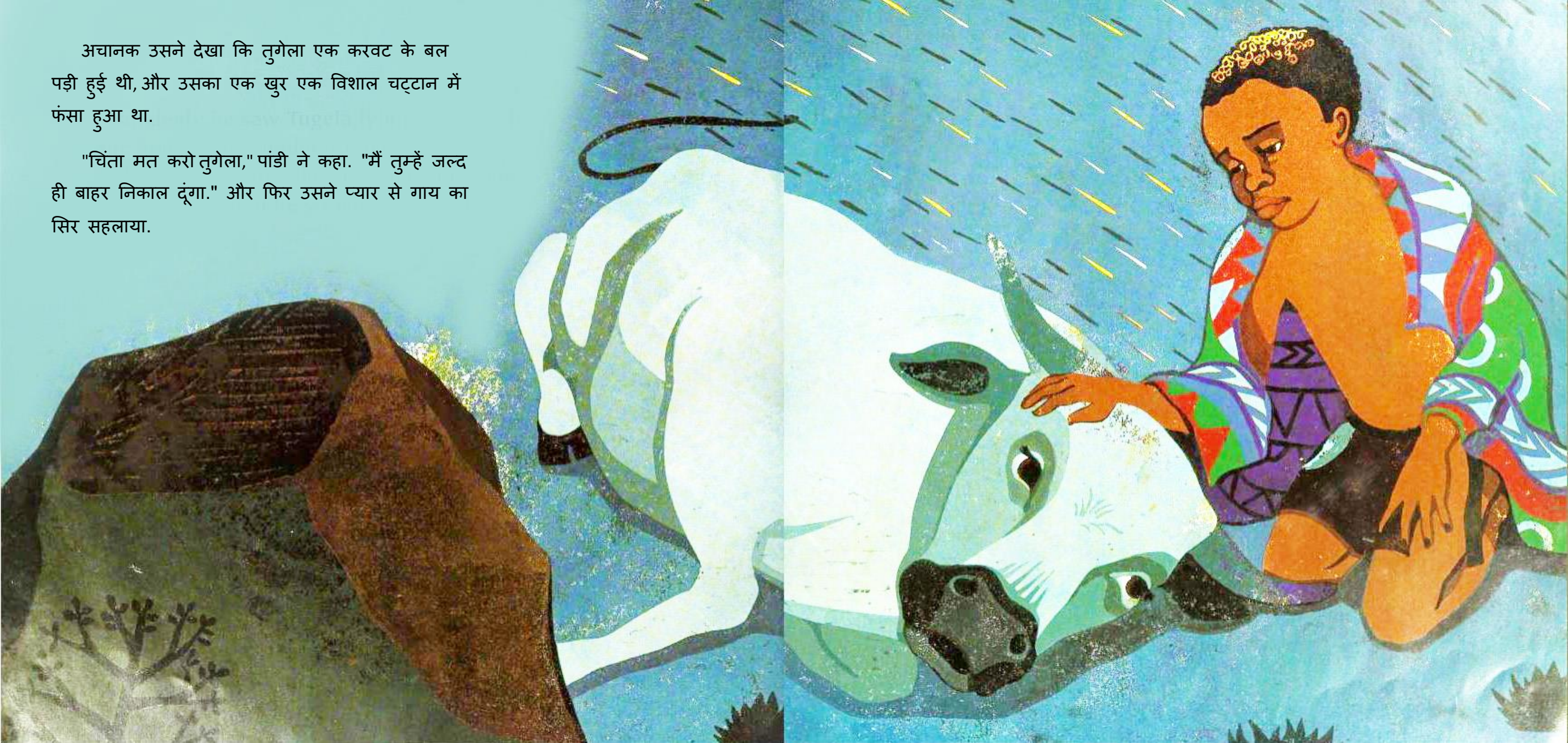
पांडी जितनी जोर से धक्का दे सकता था, उसने धक्का दिया लेकिन चट्टान टस-से-मस नहीं हुई. उसने दुबारा धक्का दिया. फिर भी चट्टान नहीं हिली.

फिर अचानक एक शक्तिशाली आवाज़ के साथ चट्टान थोड़ी सी हिली.

"चिंता मत करो, तुगेला," पांडी ने कहा. "मैं तुम्हें जल्द ही बाहर निकाल दूंगा." और उसने गाय का सिर सहलाया. फिर पांडी, तुगेला के खुर को मुक्त करने में सफल हुआ. लेकिन गाय बहुत कमजोर थी और खड़ी नहीं हो पा रही थी.
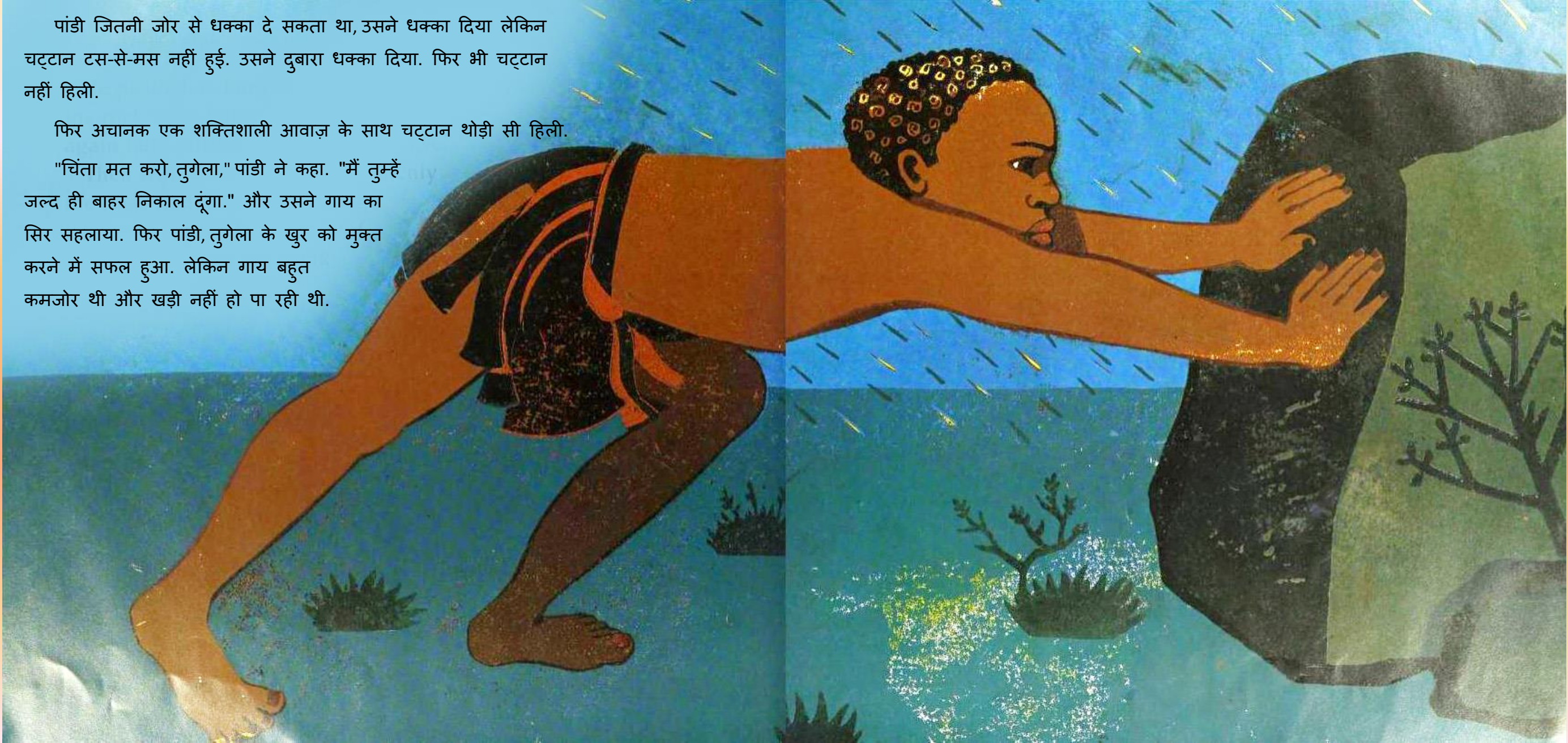
उसके बाद पांडी तुरंत गाँव की ओर भागा. "जल्दी चलो," उसने अपने पिता से चिल्लाते हुए कहा. "तुगेला बाहर तूफान में फंसी है और उसे चोट लगी है."

फिर पांडी के पिता और उसके भाई बचाव के लिए पहुंचे, और वे तुगेला को सुरक्षित घर लाए.

अगली सुबह जब पांडी उठा, तो उसके पिता उसके पास खड़े थे. उनके हाथ में एक चमकदार चमकीला भाला और एक तेंदुए की खाल थी.

"पांडी, तुम मेरे सभी बेटों में सबसे बहादुर निकले. तुम अंधेरे से डरते थे, फिर भी तुमने रात में बाहर जाकर तुगेला की जान बचाई."

पांडी की मां ने उसे गले से लगाया. "मुझे तुम पर बहुत गर्व है, पांडी," माँ ने कहा.
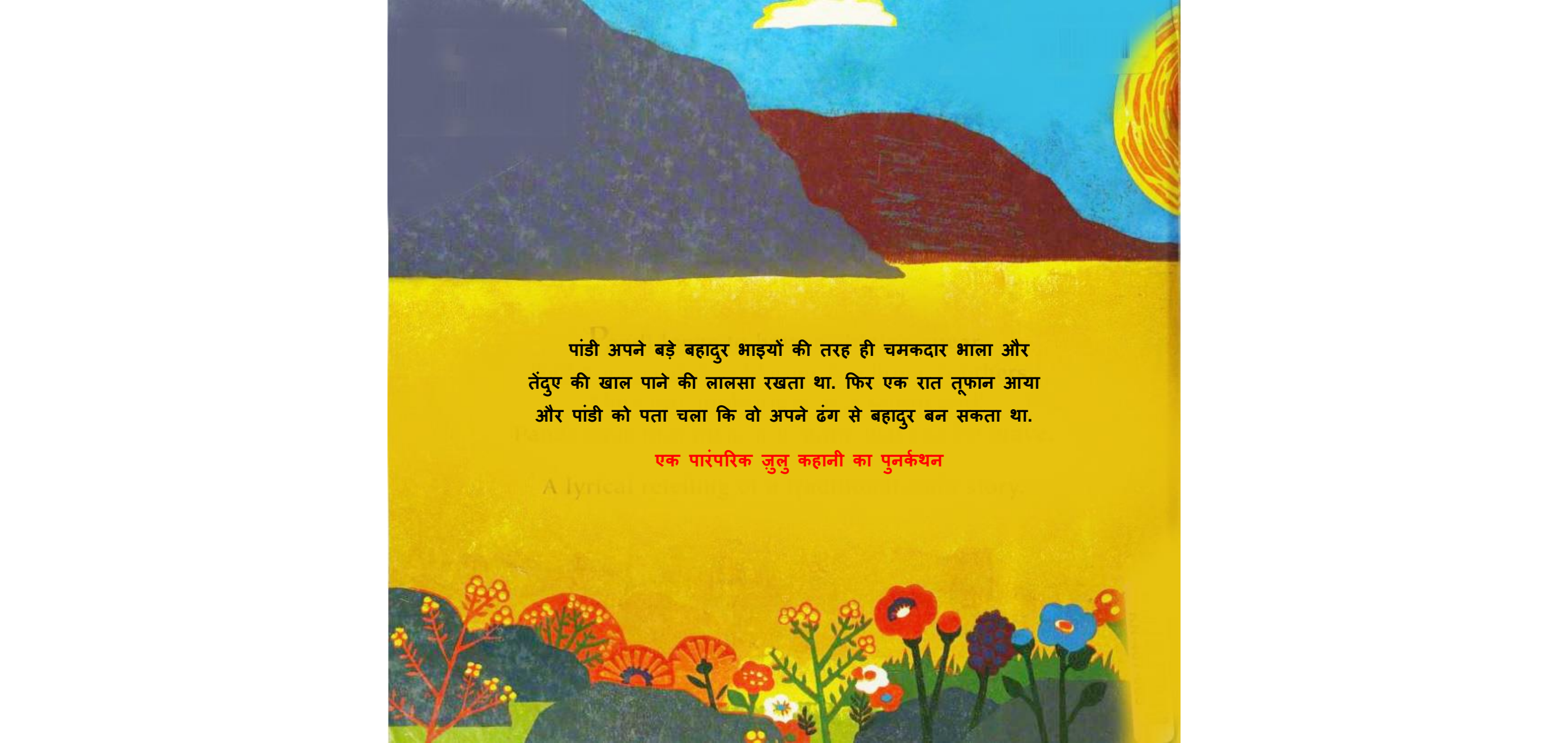
माता-पिता के पीछे-पीछे पांडी के भाई भी उसके लिए उपहार लेकर आए. जोबी ने उसे अपना प्रिय चूहा, शाका को अपनी क़ीमती गुलेल, और सेत्सवेयो को अपनी गाने वाली सीटी दी.
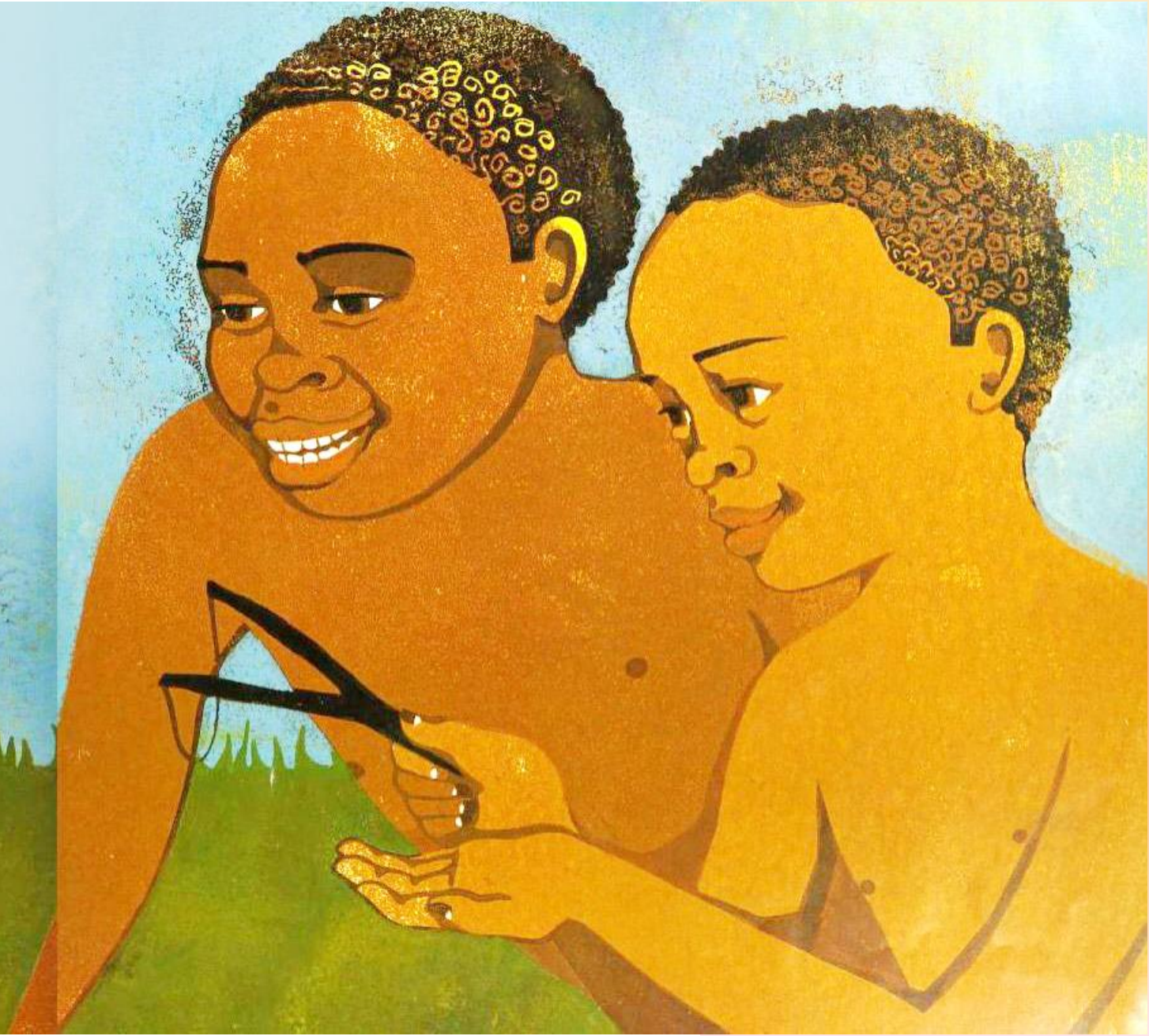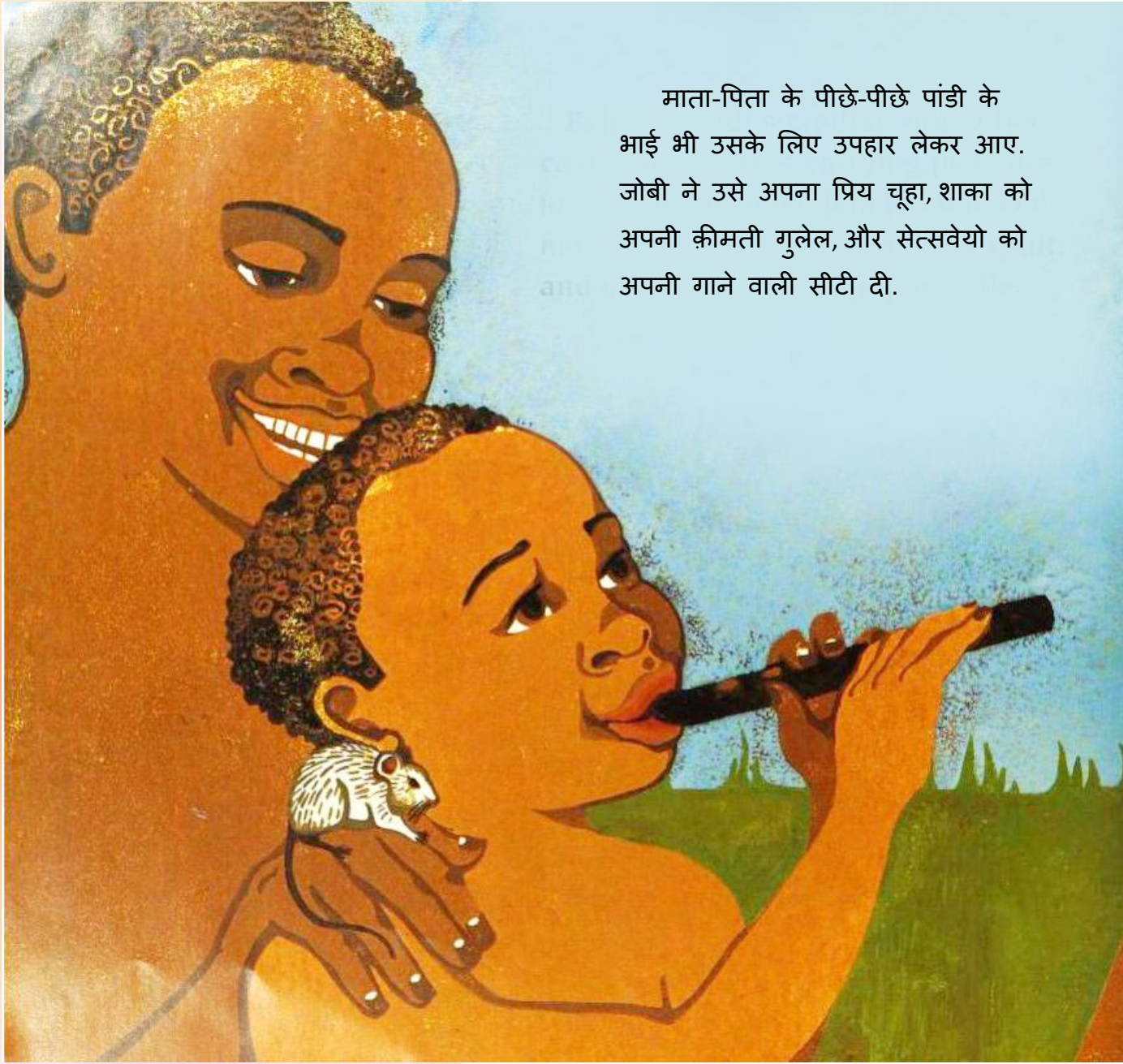
पांडी ने तेंदुए की खाल पहनी और वो धूप में बाहर भागा. उसे पता था कि वो फिर कभी भी अँधेरे से इतना भयभीत नहीं होगा.
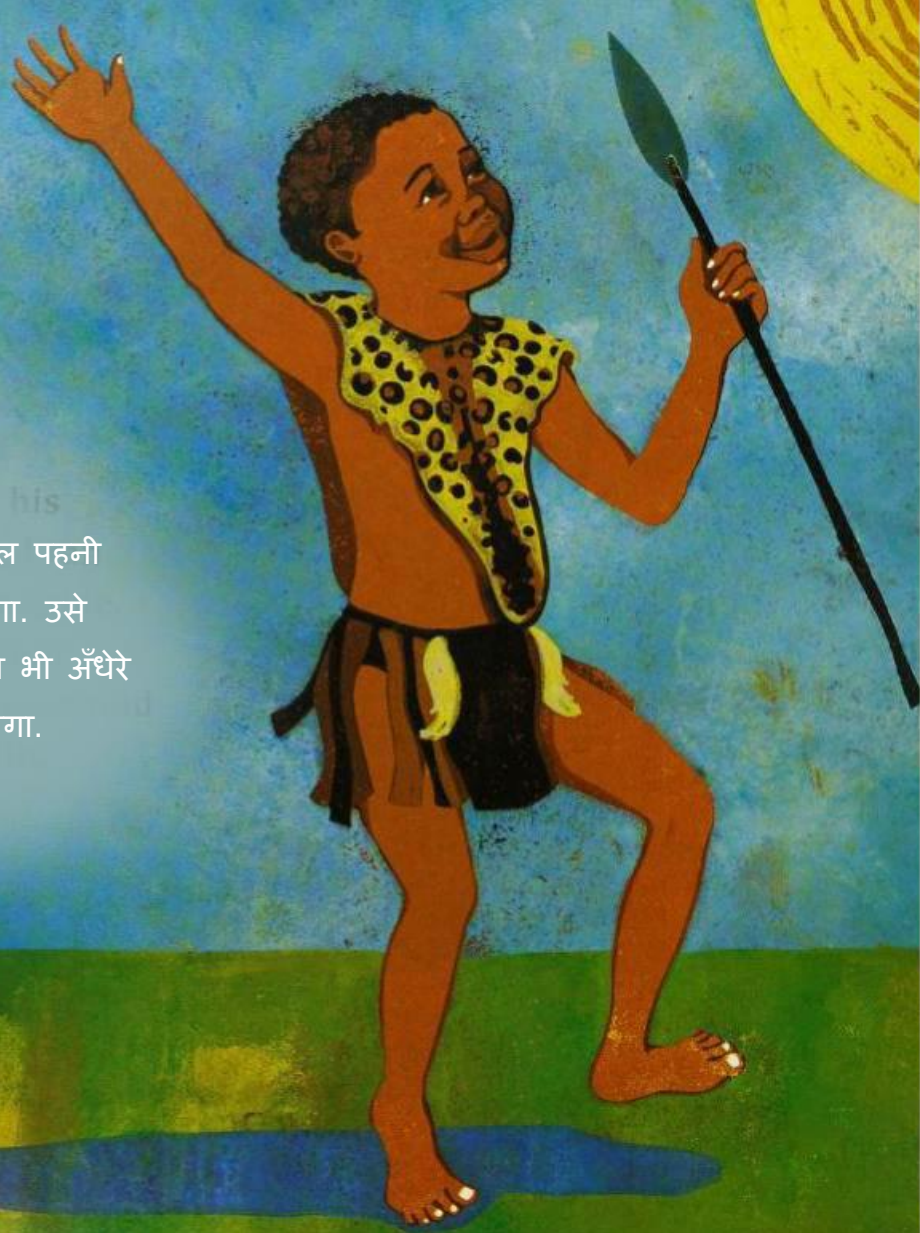
पांडी अपने बड़े बहादुर भाइयों की तरह ही चमकदार भाला और तेंदुए की खाल पाने की लालसा रखता था. फिर एक रात तूफ़ान आया और पांडी को पता चला कि वो अपने ढंग से बहादुर बन सकता था.

एक पारंपरिक ज़ुलु कहानी का पुनर्कथन